पाश की कविता

छन्नी

छन्नी वे लोकड़ियो-छन्नी रब्ब देवे वे वीरा तैनूं बन्नी-पंजाबी का एक प्रसिद्ध लोकगीत

(छन्नी ओ लोगो-छन्नी ओ भाई, रब्ब तुम्हें दुल्हन दे)

छन्नी तो छन्नी हुई
लेकिन गुड्डिए, तेरे गीतों से
तेरे वीर को दुल्हन न मिलेगी
उसे तो मार जाएगी
बाबुल की कम ज़मीन की परछाई
उसकी पास की हुई मैट्रिक को
मरियल-से भैंसे चर जाएंगे
और उसके चकलेदार सीने पर
हमेशा ही बिगड़े हुए इंजन की तकावी
चपातियां बेलती रहेगी

धीरे-धीरे हो जाएगी धीमी
उसकी जांघों के कपोतों की उड़ान
खत्म हो जाएगा चोग चावों के भंडार से-
वह बड़ा छटपटएगा
जिस दिन पहली बार अफ़ीम की चींटी
उसकी अंतड़ियों पर चलेगी
चौपाल से अपने अमली बनने
की कनसो को वह सूंघ-सूंघकर गुजरेगा
फ़िर धीरे-धीरे बदल जाएंगी चौपाल की बातें
और फ़िरनी से ही लौटने लगेंगे
उसे देखनेंवाले
गुड्डिए, दूर क्षितिज की ओर
जहां मगरमच्छों के जबाड़े मिलते हैं
नाक की सीध में चलता जाएगा तेरा वीर
तू जिसे दिन समझती है
शिकारियों की मुट्ठी में पकड़े हुए
धागे का सिरा है
और रात कुछ नहीं
डोरी में दी हुई मक्कार ढील के सिवाय
गुड्डिए, अपने तो सिर्फ़ गीत हैं
समय अपना नहीं है
गर समय अपना होता
तो तुझे खाली कलाइयां
ढंक-ढंककर रखने का फिकर न होता
अभी तो समय कोई लहू मांगती सूई है
जो पुर तो सकती है
तेरे फूलों का भ्रम बुन रहे पोटे के फूल में
लेकिन सिल नहीं सकती
तेरी कमर से घिसती जा रही कुर्ती को
छन्नी तो छन्नी हुई
लेकिन गुड्डिए, हो सके तो
वीर की शंकाओं को
गीतों के मोह की बाड़ से न घेरना
उसे खोज लेने देना
गले में पड़े हुए रस्से की गांठ
उसके माथे पर झुक आई सदियों का कूबड़
कर लेने देना सम्मोवाली लाठी को सीधा
उसे डाल लेने देना
मज़दूरी के पिडों में निकली सांपों बांबियों में हाथ
सिलसिला शायद तेरे कुएं पर उतरी
पुलिस की धाड़ से चले
या चलते पुर्जे पंच के
तिरंगे की तरह लहराते कुल्ले से
या भूकंपों की तरह दीवारों को कंपकंपाती हुई
इलैक्शन की मोटर से...
सिलसिला कहीं से भी चल सकता है गुड्डिए
अपने गीतों को जा भिड़ने देना
गंदी सांसें छोड़ती गालियों के सीने से
फ़िर एक बार
चौपालों में उसका जिक्र छिड़ेगा
जो अंधेड़े में उसके कदमों के आगे
रोशनी की लकीर बनकर चलेगा...
छन्नी तो छन्नी हुई
गड्डिए, हो सके तो वीरकी शंकाओं को
बस, गीतों के मोह की बाड़ से न घेरना

राजनीतिक मिसाइल बना मोदी का फ़ासीवादी विधिशास्त्र

पेज एक का शेष

सुप्रीम कोर्ट भी एक बार तो भुनभुनाई परन्तु करने धरने को कुछ नहीं। वकीलों का वेष धरे गुंडे कैमरे पर सारी वारदात को स्वीकार भी कर चुके, परन्तु आज तक पुलिस ने किसी को गिरफ़्तार नहीं किया। यही तो है मोदी का विधिशास्त्र।

उधर शरद कुमार के नेतृत्व में एनआईए ने भी ऐसे ही कारनामे अंजाम देने का बीड़ा उठा लिया है। वे सीधे आरएसएस से उधार लिया कानूनी ज्ञान अपनी कार्यशैली में समाहित कर रहे हैं। आरएसएस का मानना है कि उनका कोई भी सदस्य आतंकी गतिविधियों में संलिप्त नहीं हो सकता। इसी 'ब्रह्मज्ञान' को आगे बढाते हुए शरद कुमार एण्ड कम्पनी ने हिन्दू आतंकी गिरोहों के विरुद्ध अदालतों में चल रहे बेहद गंभीर करीब आधा दर्जन मुकदमे मिलीभगत से खत्म करने शुरू कर दिये हैं। इसके लिये अभियोजकों (सरकारी वकील) पर दबाव डालने के अतिरिक्त गवाहों को बैठाने और नये सिरे से विरोधी साक्ष्य पैदा करने का जादू भरा खेल चलाया जा रहा है। इस खेल को अन्ततः आरएसएस की विजय का डंका ही पीटना है। उत्तर प्रदेश चुनाव की रणभेरी बजाने में जुटी भाजपा को अध्यक्ष अमितशाह के रूप में एक खेले-खाये 'विधिशास्त्री' का नेतृत्व प्राप्त है। पार्टी का यह तड़ीपार रहा अध्यक्ष वर्षों जेल में भी रह चुका है। सत्ता में आते ही उसने स्वयं को हत्या और अपहरण के मुकदमे से डिस्चार्ज करा लिया। बिना किसी गवाही के चार्ज स्टेज पर ही अमितशाह को मुक्त करते हुए सम्बन्धित जज ने 'दिव्यवाणी' भी की कि तमाम राजनीति से प्रेरित हैं।

इस मामले मे तफ़्तीश और चार्जशीट सीबीआई की ओर से थी। जब सीबीआई से पूछा गया कि उपरोक्त जज के फ़ैसले के खिलाफ़ अपील क्यों नहीं की जा रही है तो निहायत बेशर्मी से कहा गया कि सीबीआई के पास कोई नये तथ्य नहीं हैं। एक तरह से यह तर्क प्रचलित विधिशास्त्र को सिर के बल उलटा खड़ा कर देता है। इसी तर्क को यदि आगे बढाया जाय तो एकमात्र निष्कर्ष यही निकलेगा कि अपील की व्यवस्था ही बेमानी है। आज तक तो यही होता आया था कि अपील नये तथ्य पर नहीं होती बल्कि भिन्न तरह से तथ्यों को देखने पर आधारित होती है। सीबीआई को यह भी बताना चाहिये कि तमाम अन्य सैकड़ों मामलों में वे जो अपील करते हैं उनमें कौनसे नये तथ्य खोजे गये होते हैं।

कहना न होगा कि दिल्ली पुलिस, एनआईए, और सीबीआई मोदी सरकार के निर्देशन में जो नया विधिशास्त्र लिख रही हैं उस पर अभी तक न तो सम्बन्धित उच्च न्यायालयों ने और न ही सर्वोच्च न्यायालय ने नाराजगी जाहिर की है।

नरेन्द्र मोदी नहीं हैं असली मोदी - कांग्रेस की सबसे बड़ी साजिश का हुआ पर्दाफाश

चौकाने वाली लेकिन बिलकुल सत्य खबर है कि ये नरेन्द्र मोदी नहीं हैं असली नरेन्द्र मोदी। ये कारनामा 2014 के आम चुनावों के शीघ्र बाद हुआ था , जब चुनाव हो गए थे और सारे न्यूज चैनल में इस बात को बताया जा रहा था की बीजेपी सत्ता में आ रही है और नरेंदर मोदी ही होंगे देश के अगले प्रधानमन्त्री। ठीक उसी वक्त कांग्रेस ने एक साजिश रच कर असली नरेन्द्र मोदी की जगह एक नकली नरेंद्र मोदी बिठा दिया। असल में यह कोशिश 2013 में ही चालु हो गयी थी और धीरे धीरे कर 2014 तक प्लास्टिक सर्जरी की बदौलत बिलकुल वैसा ही व्यक्ति बन दिया जैसा की हमारे असली वाले नरेंद्र मोदी जी दीखते थे। जब नरेंद्र मोदी चुनाव के बाद गुजरात जा रहे थे तभी उन्हें बदल दिया गया था और जिस व्यक्ति को शपथ दिलाई गयी थी वो कांग्रेस का अपना आदमी है। आपको मेरी बात पर यकीन नहीं हो रहा होगा तो ये सबूत लीजिए -

क्यूँ नरेंदर मोदी वाड्रा पर खामोश हैं ?

आखिर क्यों नरेंदर मोदी ने बांग्लादेश के साथ जमीन समझौता किया जो कांग्रेस की सोच थी।

आखिर क्यों नरेंद्र मोदी ने हमेशा कोसने के बाद भी आधार स्कीम को अपना लिया, नरेगा को अपना लिया ?

क्यों नरेंद्र मोदी नवाज शरीफ के आगे झुक गए और उनका जन्मदिन मनाने पकिस्तान चले गए ?

आखिर क्यों स्नष्ठढ्ढ का विरोध करने वाले नरेंद्र मोदी आज स्नष्ठढ्ढ के गुण गाने लगे ?

आखिर क्यों इटली मरीन के मुद्दे पर मोदी जी झुक गए और कातिलों को जाने दिया देश के बाहर।

आखिर क्यों ये वाले नरेंद्र मोदी दावूद को पाकिस्तान से घसीट कर नहीं ला पाये।

ऐसा क्या हुआ की नरेंद्र मोदी रुपये को 35 पर नहीं ला पाये ।

आज देश में महंगाई है, अपराध है आखिर क्यों ???

क्योंकि दोस्तों ये जो नकली प्रधानमंत्री हैं ना ये बहुत बड़ी साजिश है , हमारे असले वाले नरेंद्र मोदी को तो इटली में बंद कर दिया गया है। वो आज होते तो देश की सेना पाकिस्तान में घुस गयी होती, चीन हमारी लाल लाल आँख देख कर कही दुबक जाता, ये प्याज दाल टमाटर तो 10 रूपये किलो मिलता और आलू तो फ्री। गैस का सिलिंडर 200 रुपये का और पेट्रोल 25 रुपये का मिलता।

लेकिन ये सब नहीं हुआ क्योंकि हमारे असली वाले नरेंद्र मोदी को कही अज्ञातवास में रख गया है और नकली को प्रधानमन्त्री बन दिया गया है। मित्रो अगर देश में परिवर्तन चाहिए तो इटली चलना होगा और वहां से असली वाले नरेंद्र मोदी को लाना होगा। तभी देश में विकास होगा , इसलिए दोस्तों इटली चलो और अपना संघर्ष करो।

हर हर मोदी घर घर मोदी।

भविष्य निधि विभाग में बैठे हैं भेड़िए भी

फरीदाबाद (म मो)—भविष्य निधि विभाग के एक भ्रष्ट अधिकारी की मिलीभगत के कारण आज अनेक मजदूर अपनी भविष्य निधि के पैसे को पाने के लिए दर दर धक्के खाने पर मजबूर हो रहे हैं । एक कंपनी प्रिसिजन ऑटोमोटिव प्रगति विहार सेक्टर 59 में थी जिसका मालिक पुनीश ग्रोवर है। इस कंपनी में 40 से पचास मजदूर काम करते थे लेकिन मालिक भविष्य निधि केवल 15-20 मजदूरों की ही काटता था तथा उसे भी कभी समय पर जमा नही करता था जिस कारण इसकी कंपनी के विरुद्ध भविष्य निधि विभाग ने कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी। इस कार्रवाई में कंपनी मालिक पहले तो कई वर्ष तक शामिल ही नहीं हुआ। विभाग के जांच अधिकारी जो कि सहायक आयुक्त होता है, द्वारा कंपनी मालिक के विरुद्ध जमानती वारंट जारी किये गए लेकिन कंपनी मालिक फिर भी सुनवाई हेतु सामने हाजिर नहीं हुआ। इसके बाद उसके गैर जमानती वारंट जारी किये गए तब जाकर कंपनी मालिक ग्रोवर हाजिर हुआ। इस कार्रवाई में कंपनी की तरफ जांच के उपरांत एक लाख तिरासी हजार रुपये की रिकवरी निकाल दी गई लेकिन ग्रोवर ने वह भी जमा नहीं करवाई। इस पर जाँच अधिकारी ने कंपनी के बैंक अकाउंट सीज कर दिए तथा साथ साथ विभाग के रिकवरी अधिकारी विनोद कुमार सिंह को भी रिकवरी हेतु कार्रवाई करने के लिए लिख दिया। बैंक खाते बंद होने पर कम्पनी मालिक ने विनोद कुमार से सांठ गाँठ करके अपने बैंक खाते एक लाख तिरासी हजार रुपये के चेक देकर खुलवाने हेतु बैंक को चिट्ठी लिखवा ली तथा अपने बैंक खाते खुलवा लिए। विभाग ने जब चेक भुनाने हेतु बैंक में लगाये तो वे बाउंस हो गए। इस पर कुछ मजदूरों ने भविष्य निधि विभाग में जाकर लिखित शिकायत दी जिस पर कार्रवाई करते हुए कंपनी मालिक पर रिकवरी जमा करने हेतु दबाब बनाया तब जाकर भविष्य निधि की राशि तो जमा करवा ली गई लेकिन विभाग ने विनोद कुमार सिंह के विरुद्ध आज तक कोई करवाई नहीं की है कि उसने अपने क्षेत्राधिकार से बाहर जाकर कैसे जांच अधिकारी द्वारा बंद किये गए बैंक खातों को खुलवा दिया जिसका उसको जाँच अधिकारी के द्वारा बंद किये गए बैंक खातों को खुलवाने हेतु बैंक को चिट्ठी लिखने का अधिकार ही नही था और वह भी चेक लेकर जबकि ऐसे मामलों में कभी भी चेक नही लिए जाते हैं बल्कि डिमांड ड्राफ्ट लिए जाते हैं और तो और विभाग ने कम्पनी मालिक से इस राशि पर जो ब्याज बनता है वह आज तक भी जमा नहीं करवाया गया है और न ही आज तक मजदूरों को उनकी भविष्य निधि का पैसा दिलवाया गया है। विभागीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि यह सहायक आयुक्त प्रोबेशन पास न करने के कारण अब अपने मूल कैडर गवर्नर सचिवालय दिल्ली वापिस चला गया है। लेकिन उसने इसी विभाग के विजिलेंस विभाग में उपनिदेशक सतर्कता फरीदाबाद में ही डेपुटेसन पर आने की घोषणा कर रखी है। उसके इस घोषणा के पीछे उसके द्वारा उपनिदेशकों की चयन समिति के दो सदस्यों से उसके ही चयन करने की बात पक्की होना बताया जाता है। सूत्रों ने बताया है कि इस चयन समिति में कम से कम तीन सदस्य होते हैं एक विभाग का मुख्य सतर्कता अधिकारी ,केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त व एक अपर केन्द्रीय आयुक्त या मुख्य सतकता आयोग का प्रतिनिधि। अब देखना है कि विनोद कुमार सिंह जिसने चयन से पहले ही अंपनी नियुक्ति की घोषणा कर रखी है ,के मददगार कौन कौन होंगे ?

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**